

---

( अध्याय 3, श्लोक 8 ) :

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।

शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥

कर्म के परित्याग से, श्रेष्ठ है नियत कर्म ।

कर्मयात्रा पर चल पड़े, जिस क्षण लिया जीव जन्म ॥

---

(अध्याय 3, श्लोक १)

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥

बाँधते वही कर्म है, जो यज्ञ हेतु नहीं ।

अनासक्त हो हे अर्जुन, करो सदा यज्ञ ही ॥

---

(अध्याय 3, श्लोक 30)

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।

निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥

आत्मज्ञान के प्रकाश में, अंधे कर्म सब त्याग दो निराश हो निर्मम बनो,

तापरहित बस युद्ध हो ।

---

( अध्याय 2, श्लोक 45 )

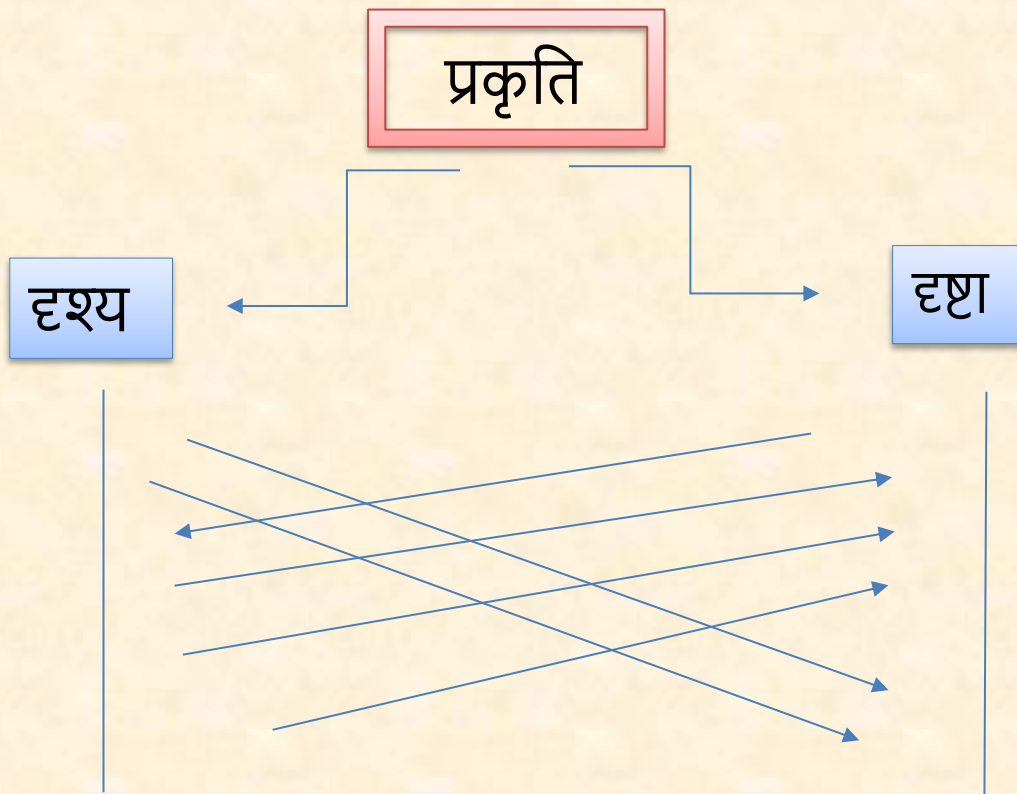
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।

निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥

संसार के कुलज्ञान के, मूल में बस काम है।

नित्य हो निष्काम हो निर्द्वंद्व हो, जो सत्यवस्थ है, आत्मवान है ॥

---



अनंत परस्पर संबंध जो प्रतिपल बदल रहे है । ये संबंध ही गति, समय , कर्म है ।

करता भाव को काट दो। अहंता को काट दो।  
आत्मा हि नियति हैं। अहम का मुक्ति तक का सफर नियत है।  
नियतम् कुरु कर्म  
हर कर्म नियत कर्म हो जाये।

---

योग दवाई है तो संयोग रोग है।  
प्रकृति संयोग है।  
प्रकृति से आसक्त होना रोग है।

---

इन्द्रिय सयम मुक्ति की कामना की नियत से होनी चाहिए।  
बंधनो को खत्म करना हि मुक्ति है।

---

प्रश्ना १ : करता हु पर भोगता नहीं।  
प्रश्न २ : ज्ञान स्पष्टता के लिए जरूरी है।  
प्रश्ना ३ : निष्काममता और नियत कर्म एक ही है।  
प्रश्न ४ : सुब इन्द्रियों का स्वामी मन है।

---

